

नाम ।

\* नामतालिकां पूरयत ।

| नाम                                             | प्रातिपदिकम् | अन्तम्            | लिङ्गम्       | विभक्तिः | वचनम्    |
|-------------------------------------------------|--------------|-------------------|---------------|----------|----------|
| विद्वत्सु                                       | विद्वत्स्    | वस्-प्रत्ययान्तम् | पुंलिङ्गम्    | सप्तमी   | बहुवचनम् |
| व्याधिभिः                                       | व्याधि       | इकारान्तम्        | पुंलिङ्गम्    | तृतीया   | बहुवचनम् |
| मात्रे                                          | मातृ         | ऋकारान्तम्        | स्त्रीलिङ्गम् | चतुर्थी  | एकवचनम्  |
| तपस्वी                                          | तपस्विन्     | इन्नन्तम्         | पुंलिङ्गम्    | प्रथमा   | एकवचनम्  |
| प्राणिनाम्                                      | प्राणिन्     | इन्नन्तम्         | पुंलिङ्गम्    | षष्ठी    | बहुवचनम् |
| अनेन प्रकारेण अधोलिखितशब्दानां रूपपरिचयं लिखत । |              |                   |               |          |          |
| सद्भ्यः                                         |              |                   |               |          |          |
| सखि                                             |              |                   |               |          |          |
| भर्ता                                           |              |                   |               |          |          |
| लक्ष्मीः                                        |              |                   |               |          |          |
| सूनोः                                           |              |                   |               |          |          |
| द्विषताम्                                       |              |                   |               |          |          |
| सीमानम्                                         |              |                   |               |          |          |
| सद्यनि                                          |              |                   |               |          |          |
| चैत्रगौर्याः                                    |              |                   |               |          |          |
| तिथौ                                            |              |                   |               |          |          |
| अम्ब                                            |              |                   |               |          |          |
| माता                                            |              |                   |               |          |          |
| शूली                                            |              |                   |               |          |          |

| नाम             | प्रातिपदिकम् | अन्तम् | लिङ्म् | विभक्तिः | वचनम् |
|-----------------|--------------|--------|--------|----------|-------|
| अम्भः           |              |        |        |          |       |
| पद्मे           |              |        |        |          |       |
| मूर्ध्नि        |              |        |        |          |       |
| शशी             |              |        |        |          |       |
| सहस्रांशौ       |              |        |        |          |       |
| चन्द्रमाः       |              |        |        |          |       |
| तनयौ            |              |        |        |          |       |
| भास्वान्        |              |        |        |          |       |
| राष्ट्रवादिनाम् |              |        |        |          |       |
| हनुमान्         |              |        |        |          |       |
| शुचा            |              |        |        |          |       |
| सरस्वत्याः      |              |        |        |          |       |
| जगति            |              |        |        |          |       |
| स्त्रियः        |              |        |        |          |       |
| भरतमुनिना       |              |        |        |          |       |
| प्रत्युषसि      |              |        |        |          |       |
| भ्रातृणाम्      |              |        |        |          |       |
| कर्तृभ्यः       |              |        |        |          |       |
| पितृभिः         |              |        |        |          |       |
| गुरुम्          |              |        |        |          |       |
| शिशोः           |              |        |        |          |       |
| पर्णशालायाम्    |              |        |        |          |       |
| धातारम्         |              |        |        |          |       |

|             |  |  |  |  |  |
|-------------|--|--|--|--|--|
| भ्रातरौ     |  |  |  |  |  |
| नामनी       |  |  |  |  |  |
| वधूः        |  |  |  |  |  |
| अष्टसिद्धयः |  |  |  |  |  |
| भगवन्       |  |  |  |  |  |
| प्राणान्    |  |  |  |  |  |
| भूमौ        |  |  |  |  |  |
| वासांसि     |  |  |  |  |  |
| भट्टिन्याः  |  |  |  |  |  |

## समासः ।

\* समासतालिकां पूरयत ।

| समस्तपदम्     | समासविग्रहः                   | समासनाम            |
|---------------|-------------------------------|--------------------|
| आसेतुहिमाचलम् | सेतोः आरभ्य हिमाचलपर्यन्तम् । | अव्ययीभावः ।       |
| तापसकुमारौ    | तापसौ च इमौ कुमारौ च ।        | कर्मधारयः ।        |
| तीर्णजलधिः    | तीर्णः जलधिः येन सः ।         | बहुव्रीहिः ।       |
| गोकुलस्थाः    | गोकुले तिष्ठन्ति इति ।        | उपपद-तत्पुरुषः ।   |
| स्त्रीपुरुषाः | स्त्रियः च पुरुषाः च ।        | इतरेतर-द्वन्द्वः । |

अनेन प्रकारेण अधोलिखितानां समस्तपदानां समासविग्रहं समासनाम च लिखत ।

| समस्तपदम्   | समासविग्रहः | समासनाम |
|-------------|-------------|---------|
| मनोविनोदनम् |             |         |
| स्तुतिकन्या |             |         |
| असन्तः      |             |         |

| समस्तपदम्     | समासविग्रहः | समासनाम |
|---------------|-------------|---------|
| गुणोत्तरः     |             |         |
| सह्याश्रितः   |             |         |
| सर्वर्तवः     |             |         |
| गोदावरीरोधः   |             |         |
| पञ्चवटी       |             |         |
| सदारः         |             |         |
| विन्यस्तहस्तः |             |         |
| पवित्राम्भः   |             |         |
| महालसाख्या    |             |         |
| तुलजापुरस्था  |             |         |
| वाजिविभूषणम्  |             |         |
| हतवचाः        |             |         |
| चन्द्रचूडः    |             |         |
| वारान्निधिः   |             |         |
| खद्योतः       |             |         |
| सहस्रांशुः    |             |         |
| पुस्तकस्था    |             |         |
| गदार्तः       |             |         |
| फलदा          |             |         |

|              |  |  |
|--------------|--|--|
| पुरुषसिंहः   |  |  |
| सानिलः       |  |  |
| वितथवृत्तिः  |  |  |
| मज्जनोत्थितः |  |  |
| बुद्धिविभवः  |  |  |
| साहसयुज्     |  |  |
| अर्थहीनाः    |  |  |
| चिन्तनमग्राः |  |  |
| कोषगताः      |  |  |
| वर्णविपर्ययः |  |  |
| प्रतिदिनम्   |  |  |
| स्नानार्थम्  |  |  |
| शिरोमर्दनम्  |  |  |

|               |              |               |              |              |
|---------------|--------------|---------------|--------------|--------------|
| शुक्लशिरोरुहः | कोषदण्डौ     | अकृष्या       | ग्रामान्तरम् | अनुदकम्      |
| राक्षसीजः     | पितृहृदयानि  | कृतनामधेयः    | सर्वदमनः     | पुरुवंशः     |
| एकान्वयः      | भूमिपतिता    | रक्षाकरण्डकम् | कुशलवौ       | सहस्रदीधितिः |
| प्रकृतिस्था   | युष्मदाश्रमे | अशननाशः       | दुष्टाचार्यः | क्षीणायुः    |
| निष्फलम्      | भवत्सार्धम्  | गोकुलस्थाः    | विद्वद्धनम्  | सकलनन्दनः    |
| रसिकवराः      | सूत्रधारः    | पादवन्दनम्    | सुरवाणी      | मनोमेलनम्    |

## कृदन्ताः ।

गतवर्षे वयं 'क्त-क्तवतु-शतृ-शानच्-कृत्याः' इत्यादीनां कृत्-प्रत्ययानाम् (कृदन्तानाम्) अध्ययनं कृतवन्तः । इदानीं, वयम् अन्येषां केषाञ्चन कृत्-प्रत्ययानाम् अध्ययनं करवाम ।

धातोः 'ल्युट्' प्रत्ययेन नामशब्दः उद्भवति । एषः शब्दः क्रियां दर्शयति ।

धातोः 'क्तिन्' प्रत्ययेन स्त्रीलिङ्गः नामशब्दः उद्भवति । एषः शब्दः क्रियायाः नाम दर्शयति ।

धातोः 'घञ्' प्रत्ययेन पुलिङ्गः नामशब्दः उद्भवति । एषः शब्दः क्रियायाः भावं दर्शयति ।

धातोः 'तृच्' प्रत्ययेन विशेषणशब्दः उद्भवति । एषः शब्दः क्रियायाः कर्तारं दर्शयति ।

| १. ल्युट् |           |            |            |             |             |
|-----------|-----------|------------|------------|-------------|-------------|
| प्रसाधनम् | उत्खननम्  | उपयोजनम्   | धावनम्     | सम्मार्जनम् | स्नानम्     |
| विलेपनम्  | नाशनम्    | परिधानम्   | धारणम्     | मर्दनम्     | धूपनम्      |
| रेखणम्    | वन्दनम्   | निर्माणम्  | अलङ्करणम्  | भूषणम्      | स्थानम्     |
| विज्ञानम् | उपनयनम्   | पालनम्     | अतिपातनम्  | प्रदानम्    | सन्दर्शनम्  |
| वदनम्     | ज्ञानम्   | निष्कासनम् | निर्धारणम् | दर्शनम्     | चिन्तनम्    |
| निर्वचनम् | वचनम्     | शमनम्      | लेखनम्     | नन्दनम्     | संवर्धनम्   |
| आकर्षणम्  | गुञ्जनम्  | मण्डनम्    | खननम्      | ग्रहणम्     | घर्षणम्     |
| फलनम्     | रोपणम्    | मेलनम्     | अध्ययनम्   | पानम्       | करणम्       |
| २. क्तिन् |           |            |            |             |             |
| रतिः      | गतिः      | भक्तिः     | विरक्तिः   | मुक्तिः     | निर्मितिः   |
| वृत्तिः   | प्राप्तिः | प्रीतिः    | अनुरक्तिः  | भीतिः       | बुद्धिः     |
| आवृत्तिः  | शक्तिः    | आसक्तिः    | युक्तिः    | अनुभूतिः    | उक्तिः      |
| ३. घञ्    |           |            |            |             |             |
| नाशः      | लेपः      | वासः       | प्रणामः    | क्रोधः      | संविभागः    |
| रामः      | योगः      | रागः       | लाभः       | आचारः       | निरनुक्रोशः |
| ४. तृच्   |           |            |            |             |             |
| प्रणन्ता  | धाता      | कर्ता      | श्रोता     | भ्राता      | भर्ता       |

## तद्धितान्ताः ।

कांश्चन विशिष्टान् प्रत्ययान् योजयित्वा नाम-सर्वनाम-विशेषणेभ्यः तद्धितान्तशब्दाः निर्मीयन्ते । अत्र केचन तद्धितान्तशब्दाः तेषां सामान्यैः अर्थैः सह दत्ताः वर्तन्ते । तेषां सम्यग् अध्ययनम् अस्माभिः कर्तव्यम् ।

- |                                          |                                           |
|------------------------------------------|-------------------------------------------|
| १) शुक्लत्वम् = शुक्लस्य भावः ।          | २६) सौन्दर्यम् = सुन्दरस्य भावः ।         |
| २) कण्टकितम् = कण्टकाः अस्य सन्ति ।      | २७) शौचम् = शुचेः इदम् ।                  |
| ३) क्षुद्रता = क्षुद्रस्य भावः ।         | २८) धैर्यम् = धीरस्य भावः ।               |
| ४) श्यामत्वम् = श्यामस्य भावः ।          | २९) चर्मवान् = चर्म अस्य अस्ति ।          |
| ५) मात्सर्यम् = मत्सरस्य भावः ।          | ३०) औपकारिकी = उपकारेण निर्वृत्ता ।       |
| ६) योग्यता = योग्यस्य भावः ।             | ३१) स्वाम्यम् = स्वामिनः भावः ।           |
| ७) दारिद्र्यम् = दरिद्रस्य भावः ।        | ३२) पौण्डरीकम् = पुण्डरीकाणां समाहारः ।   |
| ८) मत्सरिणी = मत्सरः अस्याः अस्ति ।      | ३३) शारदम् = शरदि भवम् । शारदायाः इदम् ।  |
| ९) शूली = शूलम् अस्य अस्ति ।             | ३४) देशीयाः = देशे भवाः ।                 |
| १०) महत्त्वम् = महतः भावः ।              | ३५) श्रेष्ठत्वम् = श्रेष्ठस्य भावः ।      |
| ११) अद्यतनीयः = अद्य भवम् ।              | ३६) मौलिकम् = मूले भवम् ।                 |
| १२) भारतीयः = भारते भवः ।                | ३७) सामर्थ्यम् = समर्थस्य भावः ।          |
| १३) साहित्यम् = सहितस्य भावः ।           | ३८) साधर्म्यम् = सधर्माणां भावः ।         |
| १४) निरामयत्वम् = निरामयस्य भावः ।       | ३९) मातृत्वम् = मातुः भावः ।              |
| १५) बाह्यम् = बहिः भवम् ।                | ४०) सौभद्रः = सुभद्रायाः अपत्यं पुमान् ।  |
| १६) नैसर्गिकता = नैसर्गिकस्य भावः ।      | ४१) पौत्रः = पुत्रस्य अपत्यं पुमान् ।     |
| १७) प्राचुर्यम् = प्रचुरस्य भावः ।       | ४२) धार्तराष्ट्रम् = धृतराष्ट्रस्य इदम् । |
| १८) प्राकृतिकम् = प्रकृत्याः उत्पन्नम् । | ४३) शौण्डीर्यम् = शौण्डीरस्य भावः ।       |
| १९) दैवम् = देवस्य इदम् ।                | ४४) दैवतम् = देवतानाम् इदम् ।             |
| २०) उद्योगी = उद्योगः अस्य अस्ति ।       | ४५) मानुषः = मनोः अपत्यं पुमान् ।         |
| २१) पौरुषम् = पुरुषस्य इदम् ।            | ४६) चापलम् = चपलस्य भावः इदं वा ।         |
| २२) सौकर्यम् = सुकरस्य भावः ।            | ४७) स्वाभाविकम् = स्वभावात् उत्पन्नम् ।   |
| २३) वैविध्यम् = विविधस्य भावः ।          | ४८) कुलीनम् = कुले भवम् ।                 |
| २४) नावीन्यम् = नवीनस्य भावः ।           | ४९) प्राणी = प्राणाः सन्ति अस्य ।         |
| २५) स्वास्थ्यम् = स्वस्थस्य भावः ।       | ५०) यौवनम् = यूनः भावः ।                  |

## अमरकोषः ।

**जगत्** - त्रिष्वथो जगती लोको विष्टपं भुवनं जगत् ।  
**शरीरम्** - गात्रं वपुः संहननं शरीरं वर्षम् विग्रहः ।  
**कुन्तलः** - चिकुरः कुन्तलो वालः कचः केशः शिरोरुहः ।  
**वस्त्रम्** - वस्त्रमाच्छादनं वासश्चैलं वसनमंशुकम् ।  
**द्विषत्** - रिपौ वैरिसपत्नारिद्विषद्वेषणदुर्हदः ।  
**सितः** - अवदातः सितो गौरो वलक्षो धवलोऽर्जुनः ।  
**आयुधम्** - आयुधं तु प्रहरणं शस्त्रमस्त्रमथास्त्रियौ ।  
**मृद्** - मृन्मृत्तिका प्रशस्ता तु मृत्सा मृत्स्ना च मृत्तिका ।  
**अटवी** - अटव्यरण्यं विपिनं गहनं काननं वनम् ।  
**षण्मुखः** - कार्तिकेयो महासेनः शरजन्मा षडाननः ।  
**सहस्रांशुः** - भानुर्हंसः सहस्रांशुस्तपनः सविता रविः ।  
**द्विरेफः** - द्विरेफपुष्पलिङ् भृङ्गः षट्पदभ्रमरालयः ।  
**वह्निः** - अग्निर्वैश्वानरो वह्निर्वीतिहोत्रो धनञ्जयः ।  
**कलहः** - अस्त्रियां समरानीकरणाः कलहविग्रहौ ।  
**मार्जारः** - ओतुर्बिडालो मार्जारो वृषदंशक आखुभुक् ।  
**गङ्गा** - गङ्गा विष्णुपदी जह्नुतनया सुरनिम्नगा ।  
**वीचिः** - भङ्गस्तरङ्ग ऊर्मिर्वा स्त्रियां वीचिरथोर्मिषु ।  
**दर्पणः** - दर्पणे मुकुरादशौ ।  
**विघ्नः** - विघ्नोऽन्तरायः प्रत्यूहः स्यादुपघ्नोऽन्तिकाश्रयः ।  
**शक्तिः** - शक्तिः पराक्रमः प्राणो विक्रमस्त्वतिशक्तिता ।  
**पत्नी** - पत्नी पाणिगृहीती च द्वितीया सहधर्मिणी ।  
**शकुन्तः** - शकुन्तिपक्षिशकुनिशकुन्तशकुनद्विजाः ।  
**अन्वयः** - सन्ततिर्गोत्रजननकुलान्यभिजनान्वयौ ।  
**परिव्राजकः** - भिक्षुः परिव्राट् कर्मन्दी पाराशर्यपि मस्करी ।  
**पद्मा** - लक्ष्मीः पद्मालया पद्मा कमला श्रीर्हरिप्रिया ।

त्रिष्वथः, जगती, लोकः, विष्टपम्, भुवनम्, जगत्, ।  
 गात्रम्, वपुः, संहननम्, शरीरम्, वर्षम्, विग्रहः ।  
 चिकुरः, कुन्तलः, वालः, कचः, केशः, शिरोरुहः ।  
 वस्त्रम्, आच्छादनम्, वासः, चैलम्, वसनम्, अंशुकम् ।  
 रिपुः, वैरी, सपत्नः, अरिः, द्विषद्, द्वेषणः, दुर्हदः ।  
 अवदातः, सितः, गौरः, वलक्षः, धवलः, अर्जुनः ।  
 आयुधम्, प्रहरणम्, शस्त्रम्, अस्त्रम् ।  
 मृद्, मृत्तिका, प्रशस्ता, मृत्सा, मृत्स्ना ।  
 अटवी, अरण्यम्, विपिनम्, गहनम्, काननम्, वनम् ।  
 कार्तिकेयः, महासेनः, शरजन्मा, षडाननः ।  
 भानुः, हंसः, सहस्रांशुः, तपनः, सविता, रविः ।  
 द्विरेफः, पुष्पलिङ्, भृङ्गः, षट्पदः, भ्रमरः, अलिः ।  
 अग्निः, वैश्वानरः, वह्निः, वीतिहोत्रः, धनञ्जयः ।  
 समरः, अनीकरणः, कलहः, विग्रहः ।  
 ओतुः, बिडालः, मार्जारः, वृषदंशकः, आखुभुक् ।  
 गङ्गा, विष्णुपदी, जह्नुतनया, सुरनिम्नगा ।  
 भङ्गः, तरङ्गः, ऊर्मिः, वीचिः ।  
 दर्पणः, मुकुरः, आदर्शः ।  
 विघ्नः, अन्तरायः, प्रत्यूहः, उपघ्नः, अन्तिकाश्रयः ।  
 शक्तिः, पराक्रमः, प्राणः, विक्रमः, अतिशक्तिता ।  
 पत्नी, पाणिगृहीती, द्वितीया, सहधर्मिणी ।  
 शकुन्तिः, पक्षी, शकुनिः, शकुन्तः, शकुनः, द्विजः ।  
 सन्ततिः, गोत्रम्, जननम्, कुलम्, अभिजनः, अन्वयः ।  
 भिक्षुः, परिव्राट्, कर्मन्दी, पाराशरी, मस्करी ।  
 लक्ष्मीः, पद्मालया, पद्मा, कमला, श्रीः, हरिप्रिया ।

### • विरुद्धार्थकशब्दान् लिखत ।

- |              |                |                 |                 |
|--------------|----------------|-----------------|-----------------|
| १) लघुः ×    | ६) सुलभा ×     | ११) सुकरम् ×    | १६) स्वपक्षम् × |
| २) सुगन्धः × | ७) श्रेष्ठाः × | १२) क्षीणायुः × | १७) पृष्ठतः ×   |
| ३) शुक्लः ×  | ८) द्रुतम् ×   | १३) निष्फलम् ×  |                 |
| ४) मिथ्या ×  | ९) पुरा ×      | १४) जीवितः ×    |                 |
| ५) मूढः ×    | १०) सज्जनः ×   | १५) वृद्धिः ×   |                 |

## सूचनानुसारं परिवर्तनम् ।

१. अधोलिखितानि वाक्यानि लट्/लङ्/लोट्/विधिलिङ् इत्येतेषु लकारेषु परिवर्तयत ।

\* यथा- राजा बालं परिष्वजते ।

| लट्                      | लङ्                      | लोट्                       | विधिलिङ्                 |
|--------------------------|--------------------------|----------------------------|--------------------------|
| राजा बालं<br>परिष्वजते । | राजा बालं<br>पर्यष्वजत । | राजा बालं<br>परिष्वजताम् । | राजा बालं<br>परिष्वजेत । |

- १) गर्दभाः गीतं गायन्ति ।
- २) स्तुतिकन्या कौमारं वहति ।
- ३) रामचन्द्रः गोदावरीरोधसि अवसत् ।
- ४) यात्रिवर्गः नृसिंहवाटीम् आगच्छति ।
- ५) चन्द्रचूडः वः पातु ।
- ६) अम्बा कुप्यति ।
- ७) वीर-सावरकरः तम् अब्रवीत् ।
- ८) रक्षकः द्वारताडनम् अकरोत् ।
- ९) वीर-सावरकरः गोलिकाध्वनिम् अशृणोत् ।
- १०) सरस्वती पुनः वदति ।
- ११) भाषाः चिन्तयन्तु ।
- १२) प्रसाधनकलायाः षोडश अङ्गानि सन्ति ।
- १३) अल्पकोषो हि राजा पौरजानपदान् ग्रसते ।
- १४) सीताध्यक्षः कार्पासबीजानि गृह्णीयात् ।
- १५) राजा बीजभक्तोपग्रहं कुर्यात् ।
- १६) राजा स्तेन-व्याल-व्याधिभिः उपहतान् पशुव्रजान् रक्षेत् ।
- १७) अयं स्वरः कस्यचित् लोकवीरस्य भवेत् ।
- १८) घटोत्कचः वृक्षम् उत्पाट्य प्रहरति ।
- १९) तव संरम्भः वर्धते ।
- २०) महाराजः शृणोतु ।
- २१) वर्धते मे कुतूहलम् ।
- २२) तापसः कण्वः प्रविशति ।
- २३) क्षुधा मां बाधते ।
- २४) अज्जुका प्राणान् परित्यजति ।
- २५) एते विद्वांसः तादृशमेव नाटकं द्रष्टुं न इच्छन्ति ।

२. अधोलिखितानि वाक्यानि एक/द्वि/बहुवचने परिवर्तयत ।

- १) गर्दभाः गीतं गायन्ति ।
- २) जनाः दोलोत्सवं वितन्वते ।

- ३) तरुः न वदति ।
- ४) रक्षकः द्वारभङ्गम् अकरोत् ।
- ५) भारतीयभाषाः देवीं सरस्वतीम् अगच्छन् ।
- ६) शब्दकोषाः शब्दानाम् अर्थान् प्रकाशयन्ति ।
- ७) विविधप्रसाधनसाहित्यस्य प्रभूतम् उपयोजनं भारतीयाः अकुर्वन् ।
- ८) राजा बीजभक्तोपग्रहं कुर्यात् ।
- ९) अहं सौभद्रं स्मरामि ।
- १०) अहं गिरिम् उत्पाट्य प्रहरामि ।
- ११) उटजे मृत्तिकामयूरः तिष्ठति ।
- १२) बालकः हस्तं प्रसारयति ।
- १३) अहं पितरं वेदितुमिच्छामि ।
- १४) विद्वांसः नाटकं द्रष्टुं न इच्छन्ति ।
- १५) वयं श्रीकृष्णं प्रार्थयामहे ।

### ३. पूर्वकालवाचकं निष्कासयत ।

- १) समुद्रः पीताम्बरं दृष्ट्वा स्वकन्याम् अयच्छत् ।
- २) भारतीयाः विविधप्रसाधनसाहित्यस्य प्रभूतम् उपयोजनं कृत्वा स्वसौन्दर्यं वर्धितवन्तः ।
- ३) रामचन्द्रः वन्यां वृत्तिम् अवलम्ब्य पञ्चवट्याम् अवसत् ।
- ४) माता वदने जगत् दृष्ट्वा विस्मयवशम् अगच्छत् ।
- ५) भगवान् तूष्णीं स्थित्वा योगं चिन्तयतु ।
- ६) सरस्वती स्मितं कृत्वा उक्तवती ।
- ७) अहम् एतद् बालशौण्डीर्यं दृष्ट्वा सौभद्रं स्मरामि ।
- ८) अहम् इमं स्थूलं वृक्षमुत्पाट्य प्रहरामि ।
- ९) प्रथमा तापसी विलोक्य वदति ।

### ४. पूर्वकालवाचकं योजयत ।

- १) भक्तव्रजः क्षेत्रं समागच्छति विठ्ठलं भजति च ।
- २) पाण्डुरङ्गः इष्टकायां तिष्ठति भक्तमनोरथान् पूरयति च ।
- ३) जनाः ऋतुम् अनुसरन्ति प्रसाधनं कुर्वन्ति च ।
- ४) सरस्वती विहसति वदति च ।
- ५) विनायकः विवरं सम्प्रविशति बहिः निर्गमे यतते च ।
- ६) रक्षकः शून्यकक्षम् अवलोकयति भीतिभग्नहृदयो भवति च ।
- ७) एतद् गिरिकूटम् उत्पाटयामि प्रहरामि च ।
- ८) रक्षाकरण्डकः सर्पः भवति, तं दशति च ।
- ९) रामः विदूषकम् आह्वयति वदति च ।
- १०) भीमः सौभद्रं स्मरति घटोत्कचं वदति च ।

#### ५. सति-सप्तमी-रचनां निष्कासयत ।

- १) यत्ने कृते न सिध्यति चेत् कोऽत्र दोषः ?
- २) न कूपखननं युक्तं प्रदीप्ते वह्निना गृहे ।
- ३) कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्धनम् ।
- ४) उदिते तु सहस्रांशौ न खद्योतो न चन्द्रमाः ।
- ५) पथ्ये सति गदार्तस्य भेषजग्रहणेन किम् ?
- ६) चित्ते विषण्णे भुवनं विषण्णम् ।
- ७) केशधूपे कृते केशाः सुगन्धेन विराजन्ते ।
- ८) सति कुसुमालङ्कारे सुवर्णादिभिः किं प्रयोजनम् ?
- ९) चिन्तनमग्रासु सर्वासु भाषासु सरस्वती वदति ।
- १०) अभिवाद्य प्रस्थिते मयि त्वं किम् उपदिष्टः अम्बया ।

#### ६. वाच्यपरिवर्तनं कुरुत ।

- १) वायुना न नीतः याचकः ।
- २) गीतं गायन्ति गर्दभाः ।
- ३) स्तुतिकन्या वहति कौमारम् ।
- ४) शुष्ककेशानां कृष्णीकरणं तेन उपदिष्टम् ।
- ५) बाणकविना पटभेदाः निरूपिताः ।
- ६) कृष्णेन मृद् भक्षिता ।
- ७) भाषाभिः सरस्वती पृष्टा ।
- ८) निरुक्तकारेण यास्कमुनिना निर्वचनं निरूपितम् ।
- ९) चक्रवर्तिलक्षणम् अपि अनेन धार्यते ।
- १०) त्वया मह्यं दक्षिणा प्रदत्ता ।
- ११) अहं भगवन्तम् एव अनुसरामि ।
- १२) अहं सर्पेण दष्टा ।
- १३) यमेन अहं प्रेषितः ।
- १४) नटः सत्यं वदति ।
- १५) किं त्वया एषः मानुषः आनीतः ?

\*\*\*